ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 Issue 11 February 2018

समकालीन हिन्दी पद्य विवचेन

SPECIAL ISSUE NO. 1

संपादक
डॉ. रामचंद्र ज्ञानोबा केदार
सह संपादक
डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे

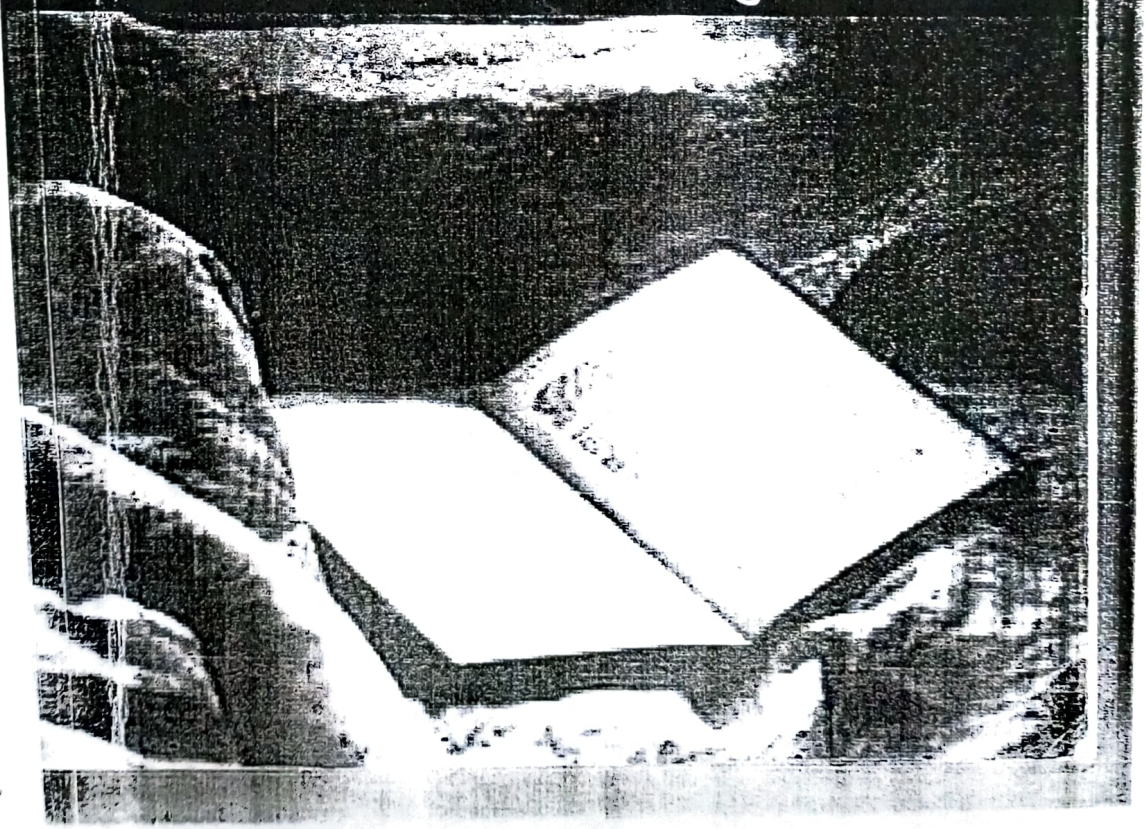

VISHWABHARATI RESEARCH CENTRE

VISHWABHARATI

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018.
http://www.vishwabharati.in
© VISHWABHARATI Research Centre

CONTENTS

१. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में अभिशप्त आदिवासी नारी
प्रा. डॉ. शंकर गंगाधर शिवशेट्टे
१३-१९

२. समकालीन हिंदी दलित विमर्श
प्रा. डॉ. अशोक विश्वनाथ अंधारे
२१-२४

३. समकालीन महिला लेखिकाओं के कहानियों में युगीन चेतना से प्रभावित नारी पात्र
प्रा. रामहरी काकडे
२५-२९

४. समकालीन हिंदी उपन्यास और नारी विमर्श
डॉ. प्रकाश गायकवाड और डॉ. नितीन कुंभार
३०-३४

५. शोषित ग्रामजीवन में सकारात्मक हस्तक्षेप करती कहानियाँ
ब्रेकिंग न्यूज. अनंत कुमार सिंह
डॉ. गोविंद बुरसे
३५-४०

६. समकालीन हिंदी रंगमंच : समस्याएँ एवं समाधान
गणेश ताराचंद खैरे
४१-५१

VISHWABHARATI RESEARCH CENTRE

VISHWABHARATI

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 25-29
Paper received: 01 Jan 2018.
Paper accepted: 26 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

समकालीन महिला लेखिकाओं के कहानियों में युगीन चेतना से प्रभावित नारी पात्र

प्रा. रामहरी काकडे

मानव जीवन अपने युग की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित होता आ रहा है। समकाल में नारी के जीवन में अमूलाग्र बदल भी दिखाई देता है। वह अपने युग की सामयिक परिस्थितियों से प्रभावित होने के कारण परतन्त्रता की चादर फेककर आज वह स्वतंत्र रुप में जीवन जीते हुए दिखाई देने लगी है। आधुनिक शिक्षा से ओर पश्चिमी सभ्यता से आकर्षित होकर स्वच्छंद तथा उन्मुक्त जीवन व्यतित करती हुई वह समाज में व्यग्र रुप में जीवन बिताने के लिए व्याकुल हो उठी है। उसके हृदय में व्याप्त संस्कारिता का मोह उसके प्रगतिपथ में बाधक बनकर आडे आने की कोशिश करता है। इसी अंध– संस्कारिता से पुरानी पीढ़ी आबध्द हो चुकी है। जो नवीन पीढ़ी की प्रगती में बाधक बनती जा रही है। इस रुढिवादिता के कारण नारी पात्रों पर युगचेतना का कोई भी प्रभाव देखने को नही मिलता है।

वर्तमान समय में संयुक्त परिवार 'टूटकर परिवार' के रुप में बदलते जा रहे है।

प्रा. रामहरी काकडे : कला एवं वि–ाान महाविद्यालय, शिवाजीनगर (गढी), तह गेवराई जि.बीड

स्वतंत्रता, आधुनिकता, स्वच्छता के कारण व्यक्ति एकाकी परिवार में ही रहना पसंद कर रहा है। लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय कहत है कि इनकी कहानियाँ आज के पारिवारिक जीवन के उन उभरे दबे कोनों को उभारती हैं, जो धीरे-धीरे गल रहे हैं और किसी-न-किसी प्रकार नई मान्यताएँ एवं मूल्य जिनका स्थान ले रहे है।१ पुरातन पीढ़ी की संस्कारगत नारियाँ संयुक्त परिवार के प्रति मोहाविष्ट हो इसका लोभ संवरण नही कर पा रही है और संयुक्त परिवार उनकी प्रतिष्ठा, सम्मान का प्रश्न बन पडा है। इसी संस्कारगत मोह के कारण चन्द्रकान्ता कृत 'मोह' कहानी में शम्भू की माँ गुणी अपने बेटो के साथ शहर में नही रहती। गुणी ने अपना समग्र जीवन गाँव के कारण वह शहर के तौर तरिकों से घुल-मिल नही पाती है। उसके तीन बच्चो को शहर में नौकरी मिल जाने के कारण वह शहर में ही रहते है। बेटों के आग्रह करने पर गुणी उनके साथ आकर शहर में रहती है। जब वह अपने गाँव की तरह शहर में रहने लगी, तब शम्भू की मालकीन शम्भू के माँ के पीछे हाथ धोकर पड जाती है। पुराने कपडों का विरोध करती हुई, उसके पहरावे पर चिडाते हुए कहती है कि, फिरन छोडकर साडी पहनो, शम्भू की माँ, अब फिरन का जमाना गया। शहर में आई हो तो अब शहर के ढंग से रहो।२ शम्भू की माँ उस मालकीन त्रस्त होकर फिर अपने गाँव में आकर रहना पसंत करती है।

चंद्रकान्ता के 'साउथ एक्स की सीता' कहानी में स्वाति के दादी ने युग चेतना के अनुकूल विचारों के न होने के कारण बहू के विचारों से टकराव होता रहा है। बहू अपनी बेटी को आधुनिक युग की नारी बनना पसंत करती है। किंतु दादी पुराने विचारों की होने कारण वह अपनी बहू और पोती दोनो को भी दादी संस्कारी बनाना पसंद करती है। साँस के विचारों का विरोध करती हुई बहू कहती है कि ऊँहो। सासजी त्रेता युग में जी रही है। बासवी सदी में सीता और राम नही जन्मते। अगर गलती से जन्मे तो भी आज की फास्ट चैचिंग सोसाइटी में मिसफिर हो जाएँगे।३ आधुनिक भारतीय समाज में नारी में जागृत करने के विविध प्रयास किये गये है। इस जागृती का कोई भी लाभ होता नही दिखाई दे रहा है। नारी संस्किारता और रुढ़िग्रस्तता से आज तक उभर नही सकी है। 'दहेज' के प्रति मनुष्य का बढता लगाव आज भी उसी तरह का है जैसा पूर्व था। जिसके कारण नारियों जाने जोखिम में पड रही है, समाज में व्याप्त दहेज की समस्या के कारण नारियाँ विविध यंत्रणा का शिकार बनती जा रही है।

रिवार में ही रहना
हानियाँ आज के
रे-धीरे गल रहे हैं
स्थान ले रहे है।१
ोहाविष्ट हो इसका
तिष्ठा, सम्मान का
न 'मोह' कहानी में
ी ने अपना समग्र
ही पाती है। उसके
ी रहते है। बेटों के
वह अपने गाँव की
ं पीछे हाथ धोकर
ावे पर चिडाते हुए
फिरन का जमाना
माँ उस मालकीन

दादी ने युग चेतना
व होता रहा है। बहू
। किंतु दादी पुराने
दी संस्कारी बनाना
हती है कि ऊँहो।
नही जन्मते। अगर
सफिर हो जाएँगे।३
स किये गये है। इस
ो संस्किारता और
ा मनुष्य का बढता
ारियों जाने जोखिम
ाँ विविध यंत्रणा का

कामना चंद्रा के 'एक साल' कहानी में अपना हैसियत न होनेपर भी खर्चा करने की चाह में माता-पिता की मनोवृत्ति के संदर्भ में पुत्री प्रतिमा कहती है कि माँ और पिताजी के उत्साह का अन्त नहीं है। दस साल से जिस दमतोड मेहनत से पिताजी पैसा कमा रहे थे और माँ मेरी शादी के लिए जोड-जोडकर रख रही थी आज उसे खर्च करने का वक्त आ ही गया था। अँगूठी, सूट, चाँदी के बर्तल, और भी न जाने क्या-क्या। कोई कह न पाए कि मामूली मास्टर और दे ही क्या पाता।''४ यह कहानी दहेज से त्रस्त हुए एक मास्टर के परिवार की कहानी है। जो पाई-पाई जोडकर अपने बेटी का विवाह करता है और उस जमा पूँजी को एक ही दिन में समाप्त कर देता है। इस कहानी में रुढिवादिता का परिचय दिया गया है। 'सती' नामक कहानी में भी रुढियों का लेखा जोख़ा प्रस्तुत हुआ है। दहेज के लिए सती की सास प्रताडित करते हुए कहती है- कैसे भूखमरों से पाला पडा है, ये देकर छुटकारा पा गए। कुछ शर्म लिहाज होती तो बेटी को एक जडाऊँ सेट नही दे देते। पर ऐसे नकटो से क्या उम्मीद करे जो शादी पर बेईमानी से नही चूके। हमी पागल ये जो इन कंगालों में फँस गए वरना मेरे बेटे को दहेज की कमी थी।५ भारत विविध विकास होने के बावजूद भी लोग रुढिवादिता निभाने लगे हुए है। सुशिक्षित लोग भी इस परंपरा से छूटे नही है। नारियाँ भी नारी की चिंता नही करती है वही उसे दहेज के लिए प्रताड़ित करती है। आधुनिक युग में नारी-शिक्षा, आधुनिकता, नारीझेतना के बावजूद भी उसकी परम्परागत धारणा बदली नही है। कामना चंद्रा कृत 'प्रेमरोग' कहानी में रमा सोलह साल की हो जानेपर उसकी परम्परागत धारणा बदली नही है। कामना चंद्रा कृत 'प्रेमरोग' कहानी में रमा सोलह साल की हो जानेपर उसकी माता रमा के विवाह के लिए चिंतित रहती है और राधा की माँ कहती है- लो क्या अच्छा और क्या बुरा। बेल की तरह यह लडकी दिन-दूनी रात चौगुनी बढ रही है, जो भी मिले पकड़कर इसके हाथ पीले कर दो।६

चंद्रकान्ता के 'फिलहाल' कहानी की आरती की माँ पुत्री को समझाती हुई कहती है कि ''देख रत्ती सभी लडकियाँ एक दिन माँ का घर छोडकर अपना घर-संसार बसाती है। यही नियम है। लाख दायित्व हो उन्हे छोड़ना पडता है७ प्रस्तुत कहानी में एक औरत दुसरी औरत को समझाती है कि कितनी भी यातना हो जाए फिर भी अपने पति का घर नही छोड सकते है। रुढिगत संस्कारों की बात करती है। मृदुला गर्ग की कहानी 'खरीदार' की नीना माँ से कहती है यह तो दुनिया का कायदा है। पहले-पहल लड़की की सूरत देखी जाती है और लडके की कमाई बाद

में सब ठिक हो जाता है तेरी तरह जिद करती तो आधी लडकियाँ कुँआरी रह जाती।''८ इस प्रकार से नारियों में सामायिक युग का प्रभाव न पडने के कारण परम्परागत धारणाओं के अनुसार पुत्री की इच्छा के विरुध्द शीघ्र ही उसके विवाह के बन्धन में बाँध देता है। रुढ़िग्रस्तता एवं संस्कार के कारण आधुनिक समाज में आंतरजातीय विवाह के विषय में नारी के विचार बदले नही है। चन्द्रकान्ता के 'विरासत' में ब्राम्हण वीरा का मुस्लिम लडकी जेबा से विवाह होने की बात सुनकर माँ चीखती है तो तू ..... वीरा तू? ब्राम्हण की सन्तान? जेबा को घर से निकालकर ही वीरा की माँ दम लेती है।९ विधवा नारी की सामाजिक स्थिति में इसी रुढिग्रस्तता के कारण आज भी सुधार की स्थिति देखने को नही मिलती है। 'दो स्मृति चिन्ह' की बिंदु के द्वारा अन्तर्जातीय विवाह कर लेने से पूरा परिवार रुढिग्रस्तता के कारण दूध में गिरी मक्खी के तरह उसे निकाल के फेक देते है। सूर्यबाला कृत 'गोबरबच्चा का किस्सा' में मैना भी रुढिग्रस्तता की शिकार बनी है। वह अधेड उम्रवाले लडके से अनमेल विवाह कर दिया जाता है।

समग्रत कहा जा सकता है कि एक ओर नारी में आधुनिक शिक्षा, पाश्चात्य प्रभाव से जागृती का संचार हुआ है वही दूसरी ओर परम्परागत संस्कारों से आबध्द नारी की यह पहलू छू नही सके है। वह रुढिग्रस्तता की जकडन में आज भी नारी फँसी हुई है। कानूनी तौर से नारीयों को विविध सुविधाओं का लाभ दिया जा रहा है फिर भी नारी यह युगीन चेतना से अप्रभावित रुप में ही जी रही है।

निष्कर्ष :

युगीन चेतना से अप्रभावित नारियों में अधिकांश वृध्द महिलाएँ है, उन बुजुर्ग महिलाओं की प्राचीन संस्कारों में गहरी आस्था रही है। यह अपने विचारों से नई पीढी को भी जकडती रहती है। वृध्द महिलाएँ नई पीढी के ऊपर अपना संस्कारगत प्रभाव छोडती जा रही है। संस्कारिता की शिक्षा देकर दिग्भ्रमित करती है। विषादमय जीवन जीने हेतु उसे बाध्य किया जाता है। युग चेतना से अप्रभावित रहने के मूल में प्राचीन परम्पराओं, रुढियों के प्रति दिल के कोने में अवस्थित निष्ठा एवं मोह ही है जो इन नारियों को जकडे हुए है। वह मुक्त भी होना चाहे तो उसे मुक्त होने का मौका भी नही मिलता है।

संदर्भसूची :

अ.क्र.	लेखक	कहानीसंग्रह/ग्रंथ कहानी	पृष्ठ
१)	लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	आधुनिक कहानी का परिपार्श्व	१४९
२)	चंद्रकान्ता	दहलीज पर न्याय अभी वे जिन्दा है	९५
३)	चंद्रकान्ता	पोशनूल की वापसी तथा अन्य कहानियाँ साऊथ एक्स की सीता	२४
४)	कामना चंद्रा	प्रेमरोग तथा अन्य कहानियाँ एक साल	९३
५)	कामना चंद्रा	प्रेमरोग तथा अन्य कहानिया सती	११२
६)	कामना चंद्रा	प्रेमरोग तथा अन्य कहानियाँ प्रेमरोग	२७
७)	चंद्रकान्ता	दहलीज पर न्याय फिलहाल	८७
८)	मृदुला गर्ग	ग्लेशियर से खरीददार	८३
९)	चन्द्रकान्ता	पोशनूल की वापसी तथा अन्य कहानियाँ वरासत	९५